जीवन-लक्ष्य

GOAL OF LIFE

का अविकल अनुवाद

दिव्य जीवन संघ के संस्थापक-परमाध्यक्ष

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

का

चतुर्थ हरि-संकीर्तन-सम्मेलन, लाहौर में

२४ दिसम्बर, १९३७ को

अध्यक्ष पद से

भाषण

—प्रकाशक—

डिवाइन लाइफ सोसाइटी

पो० शिवानन्दनगर,

जि० टिहरी-गढ़वाल (यू०पी०) हिमालय

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

जीवन - लक्ष्य

GOAL OF LIFE

का अविकल अनुवाद

दिव्य जीवन संघ के संस्थापक - परमाध्यक्ष
परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज
का
चतुर्थ हरि - संकीर्तन - सम्मेलन, लाहौर में
२४ दिसम्बर, १९३७ को
अध्यक्ष-पद से
भाषण

—प्रकाशक—

डिवाइन लाइफ सोसाइटी
पो० शिवानन्दनगर,
जि० टिहरी - गढ़वाल (य०पी०) हिमालय

डिवाइन लाइफ सोसाइटी के लिए श्री स्वामी कृष्णानन्द जी द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा योग–वेदान्त फारेस्ट एकैडेमी प्रेस, शिवानन्दनगर, जिला टिहरी-गढ़वाल (यू. पी.) हिमालय में मुद्रित।

प्रथम संस्करण (अंग्रेजी)—१६३७
द्वितीय संस्करण (अंग्रेजी)—१६६७
प्रथम संस्करण (हिन्दी)—१६६८
(प्रति ४०००)

Printed in recognition of the meritorious services renderd to The Divine Life Society
by
Dr. Devaki Kutty, F.R.C.O.G., Lucknow.

दिव्य जीवन संघ के प्रति
डा० देवकी कुट्टी, एफ.आर.सी.ओ.जी., लखनऊ,
की सेवाओं के उपलक्ष्य में यह पुस्तिका मुद्रित की गयी है।
ईश्वर आशीर्वाद उन्हें प्राप्त हो !

पुस्तक मिलने का पता—
शिवानन्द पब्लीकेशन लीग,
डिवाइन लाइफ सोसाइटी, पो० शिवानन्दनगर,
जिला टिहरी-गढ़वाल (यू. पी.) हिमालय।

आमुख

महान् सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज जिज्ञासुओं में प्रेरणा भरने, उनमें जागरण लाने तथा उनका पथ-प्रदर्शन करने का अनुपम कार्य आजीवन करते रहे थे। लाहौर में २४ दिसम्बर १९३७ को आयोजित चतुर्थ हरि-संकीर्त्तन-सम्मेलन के अध्यक्ष-पद से श्री स्वामी जी ने जो भाषण दिया था, वही इस पुस्तिका की विषय-वस्तु है।

हममें से जो कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन-पथ पर अपना पग बढ़ाना चाहता है, उस दिशा में अग्रसर होना चाहता है, यह स्वाभाविक है कि उसके सामने एक आदर्श हो। यह उसकी प्राथमिक आवश्यकता है। दूसरी अपेक्षित वस्तु है एक सुनियोजित और सुनियन्त्रित कार्यक्रम, तथा विचारों की ठोस पृष्ठभूमि का विकास तीसरी अपरिहार्य आवश्यक वस्तु है। श्री स्वामी शिवानन्द जी ने इन्हीं तीन आवश्यकताओं का अनुमोदन किया था।

भक्ति के नौ प्रकार हैं और संकीर्त्तन भक्ति उनमें से एक है। संकीर्त्तन-साधना अपने-आप में पूर्ण है अतः एकमात्र संकीर्त्तन द्वारा भी भगवत्-साक्षात्कार किया जा सकता है। इतना ही क्यों ? इस कलियुग में तो भागवतीय चेतना की प्राप्ति का यही सर्वाधिक सुगम साधन है। कीर्तन से सारे कलमष धुल जाते हैं, वासनाओं का क्षय होता है, संस्कारों का परिष्कार होता है,

हृदय प्रेम और भक्ति से आप्लावित हो उठता है और भक्त को भगवान् के साक्षात् दर्शन होते हैं।

इस भाषण में, श्री स्वामी शिवानन्द जी ने भक्तों के सम्मुख संकीर्त्तन समन्वित भक्तियोग-साधना की महत्ता को रख कर ही सन्तोष नहीं कर लिया। उन्होंने मानव जीवन की गरिमा, जीवन-लक्ष्य, आधुनिक शिक्षा-प्रणाली, कर्मयोग की महत्ता, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की सर्वव्यापकता, संकीर्त्तन की महिमा और उसका प्रभाव आदि मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का यायातथ्य विश्लेषण भी किया है।

श्री स्वामी जी ने जहाँ यह कहा है कि 'मनुष्य केवल रोटी पर ही निर्वाह नहीं कर सकता, पर वह प्रभु के नाम पर जीवित रह सकता है।' वहीं पर उन्होंने यह कह कर कि 'भगवान् की सहायता की याचना करते हुए अकर्मण्य बने न बैठे रहो। उठो, पुरुषार्थ करो, क्योंकि भगवान् उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं' अध्यवसाय की महत्ता पर बल दिया है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह लघुकाय पुस्तिका ईश्वर-साक्षात्कार के जिज्ञासुओं को प्रेरणा देगी, बुद्धिवादियों के नेत्रोन्मीलन करेगी और संसार-ताप से क्लेशित मानवों के मार्ग-दर्शन की सान्त्वनादायी सन्देशवाहिका बनेगी।

शिवानन्दाश्रम,
२६ फरवरी, १९६८
(महाशिवरात्रि)

—प्रकाशक

जीवन-लक्ष्य

हे ब्रह्म-सन्तति !

एक वर्ष के दीर्घ समयोपरान्त मैं पुनः आपके समक्ष इस मञ्च पर उपस्थित हुआ हूँ। विशुद्ध प्रेम तथा भक्तिभावयुक्त ईश्वरप्रेमी भक्तों के इस दुर्लभ जन-समूह के साथ मिलकर प्रभु के पवित्र नाम के उच्चारण करने से न केवल मेरा हृदय अपितु सम्पूर्ण अस्तित्व ही अपरिमित आनन्द एवं भावातिरेक से ओतप्रोत हो रहा है। ईश्वर की कृपा से आप समस्त भक्तजन दिव्यानन्द तथा अमरता-प्रदायक सुधा-रस पान करें !

हिन्दू धर्म जाज्वल्यमान दिग्दर्शक ध्रुव तारे की भाँति योग, दर्शन तथा रहस्यवाद के साधकों का पथ-प्रदर्शन करता है, उन्हें उस रहस्यपूर्ण जगत् की, अज्ञात जगत् की ओर आमन्त्रित करता है, जिसकी खोज को वे सहर्ष लालायित हों तथा इस दिशा में अधिकाधिक अग्रसर होने के लिए वह उन्हें सतत प्रोत्साहन देता रहता है, यहाँ तक कि वे एक ऐसी स्थिति प्राप्त कर लेते हैं जहाँ पहुँच कर मानव मात्र की अभीष्ट सारी सिद्धियाँ उनकी आज्ञाकारिणी बन जाती हैं और सारे सांसारिक आकर्षण उनके लिए फीके पड़ जाते हैं, वे उन पर अब अपना प्रभाव नहीं डाल सकते।

यह सच है कि सुख के लिए प्रयास करना मानव की सहज प्रवृत्ति है, परन्तु अपने कर्मों के फल-स्वरूप प्राप्त होने वाला यह सुख क्षणिक ही, केवल सीमित काल के लिए ही होता है; जिससे घोर निराशा तथा शोक ही उसके हाथ आता है। ऐन्द्रिक सुख क्षणभङ्गुर हैं। विषयोपभोग की अतिशयता इन्द्रियों को जीर्ण एवं शिथिल बना डालती है। इतना ही नहीं ये विषय-भोग प्रायः पाप से भी संपृक्त होते हैं, जिससे मनुष्य असीमित दुःख ही प्राप्त करता है। भले ही मनुष्य को सांसारिक सुख यथेच्छ प्राप्त हो और भले ही इन सुखों की मात्रा यथासम्भव प्रचुर हो, उनमें विविधता भी हो तथा वे स्वच्छन्द रूप से प्राप्य भी हों, सुतरां वृद्धावस्था अपना विकराल रूप धारण कर उसे मृत्यु और विनाश के आतङ्क से भयभीत बनाती रहती है। यह ध्यान देने की बात है कि स्वर्गिक सुख वस्तुतः इन ऐन्द्रिक सुखों की अपेक्षा अधिक स्पृहणीय नहीं हैं। उनकी प्रकृति भी इन सुखों के समान ही है। हाँ, वे इनकी अपेक्षा दुःख से कम मिश्रित और अधिक काल तक टिकने वाले होते हैं। फिर भी उनका भी अन्त तो होता ही है। क्योंकि इनकी प्राप्ति कर्म द्वारा होती है और कर्म सीमित होते हैं, अतः उनका फल भी सीमित ही होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि इन सुखों का अन्त अवश्यम्भावी है।

ऐ स्वल्प विश्वासी तुच्छ मानव ! यह जानते हुए भी कि ये विषय-सुख भोग-काल में ही सुखदायी होते हैं, उससे अधिक वे तनिक भी सन्तोष नहीं दे सकते हैं, फिर भी तू इनकी प्राप्ति के लिए व्यर्थ प्रयत्न क्यों करता है ? तू उस परम सुख की खोज क्यों नहीं करता जो नित्य तथा असीम है और जिसका प्रादुर्भाव एक अविकारी सत्ता से होता है ? इस सत्ता की खोज कर और उसे प्राप्त कर। विश्वास रख कि यदि तू अपनी इस खोज में सफलमनोरथ होता है तो तुझे अव्यय सुख की प्राप्ति होगी।

संसार के समस्त महान् धर्म एक स्वर से यह घोषणा करते हैं कि जिस सत्ता का ऊपर उल्लेख किया गया है, ऐसी एक सत्ता है और आप मेरा विश्वास करें कि वह सत्ता आप से अधिक दूर नहीं है, आपके बहुत ही सन्निकट है, आपके ही इस देह-मन्दिर में, आपके अन्तर्तम हृदय-प्रकोष्ठ में ही स्थित है। वह आपके मन का मौन साक्षी तथा आपकी बुद्धि के सारे कार्यकलापों का द्रष्टा है। यह वही औपनिषदिक परम सत्ता है जिसकी महिमा की ऋषि, मुनि, साधु-सन्त, योगी, दार्शनिक तथा पैगम्बरों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उसका साक्षात्कार भक्तियोग-साधना द्वारा किया जा सकता है।

क्या कभी आपने सोचा है कि आपको इस देह की प्राप्ति क्यों हुई है ? आपके जन्म का क्या हेतु

है ? आपके जीवन का लक्ष्य क्या है ? क्या आप यहाँ इस मर्त्यलोक में केवल खाने, पीने तथा विषय-भोग के लिए आये हैं, अपनी पत्नी तथा सन्तान का भरण-पोषण करने के लिए ही आये हैं ? अथवा आपके आने का इससे कोई अधिक महत्तर उद्देश्य है ? ऐ अमर आत्माओ ! ऐ अमृत पुत्रो ! जागो और नेत्र खोलो। एक ऐसा भी स्थान है जहाँ न मृत्यु है न व्याधि, न शोक है न पीड़ा, न शङ्का है न भ्रान्ति। क्या आप इस चिरन्तन सुख और आनन्द के अमर धाम के प्राप्त करने की आकांक्षा नहीं रखते ? मन तथा इन्द्रियों को अनुशासित करो। सङ्कीर्तन तथा आत्मचिन्तन का नियमित अभ्यास करो। तभी आप अमरत्व तथा प्रगाढ़ स्थिर सुख को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक मानव आनन्द और एकमात्र आनन्द चाहता है तथा वह सम्पत्ति, प्रभुता, स्त्री, पुत्र, पद तथा तथाविध अन्य साधनों से इसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होता है। वह इसे हस्तगत करने के लिए एक विषय से दूसरे विषय के पीछे भागता फिरता है; किन्तु यह उसके हाथों से बच कर निकल जाता है। उसे अनेकों धक्के खाने पड़ते हैं, अनेकों थपेड़े लगते हैं और अनेकों असफलताओं और निराशाओं का सामना करना पड़ता है। वह हँसता है, नाचता है, रोता है तथा शोक करता है। उसकी इन्द्रियों की शक्ति क्षीण पड़ जाती है। वह विषय-पदार्थों से उपराम हो जाता है और अन्ततः

इस परिणाम पर पहुँचता है कि विषय-सुख भ्रामक हैं और उनसे कभी भी सच्चे तथा चिरस्थायी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

मनुष्य जब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता तो वह दुःखी होता है। वह किसी वस्तु विशेष की आवश्यकता अनुभव करता है और उसे किसी न किसी रूप से प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होता है। यदि वह अपने इस प्रयास में सफल होता है तो उससे उसे क्षणिक आनन्द की प्राप्ति होती है और यदि वह विफल होता है तो अन्धकार और निराशा में, उदासी तथा भग्नआशा में निमग्न हो जाता है। प्राप्त वस्तु भी यदि उससे छिन गयी तब भी वह दुःखी होता है। एक आवश्यकता की पूर्ति होते ही दूसरी का उदय हो जाता है। इस भाँति वह नित्यप्रति नयी-नयी आवश्यकताओं की सृष्टि करता रहता है। उसकी कामनाओं का कभी भी अवसान नहीं होता है। आवश्यकता एवं कामना के साथ चिन्ता, आकुलता, भय तथा उत्कण्ठा सदैव लगी रहती हैं। कामना अज्ञान की उपज है। ब्रह्म परिपूर्ण है। उसमें ही समस्त कामनाओं का परिशमन होता है। कामना ही मन को अशान्त बनाये रखती है। इच्छाएं जितनी ही मात्रा में कम होंगी उतनी ही मात्रा में अधिक सुख की प्राप्ति होगी। निष्काम व्यक्ति अखिल विश्व का सम्राट् है। भगवत्पाद आद्य शङ्कराचार्य का कथन है कि 'कौपीनधारी, निरीह,

अपरिग्रही सन्त ही इस संसार में सब से अधिक सुखी मानव है।' आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही कामनाओं व वासनाओं का उन्मूलन सम्भव है।

मानव का उच्चतम लक्ष्य क्या है ? इस बात से सभी सहमत हैं कि मनुष्य के कर्म करने का एक ही लक्ष्य है और वह है सुख की प्राप्ति। अतः मानव का उच्चतम ध्येय शाश्वत सुख की प्राप्ति ही होना चाहिए। यह शाश्वत सुख केवल आत्मा में ही प्राप्य है। विषयों के संयोग से प्राप्त होने वाला सुख क्षणिक तथा भ्रामक होता है तथा उत्कण्ठा, पीड़ा, भय और पाप से मिश्रित होता है।

सन्मित्रो ! जीवन एक समर-क्षेत्र है। जीवन एक विजय है। अपने आदर्श एवं लक्ष्य के प्राप्त्यर्थ युद्ध करने का नाम ही जीवन है। जीवन जागरण की एक शृङ्खला है। आपको अपने मन तथा दसों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। ये ही आपके वास्तविक शत्रु हैं। आपको अपनी परिस्थितियों, पुरानी दुष्प्रकृतियों, पुराने कुसंस्कारों, कुविचारों तथा दुर्भावनाओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, विरोधी आसुरी शक्तियों से डट कर युद्ध करना चाहिए तथा अधःपतनगामी शक्तियों का प्रतिरोध करना चाहिए।

आज का यह एक सर्वसम्मत विचार है कि आज के विश्वविद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों तथा प्रारम्भिक पाठशालाओं में अपनायी जाने वाली

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली भारतीय विद्यार्थियों के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के अनुकूल नहीं है, अतः इसके क्रान्तिकारी पुनर्गठन की महती आवश्यकता है। मेरा यह सच्चा एवं दृढ़ विश्वास है तथा मैं आशा करता हूँ कि अब भारत के ग्यारह राज्यों में से सात राज्यों में काँग्रेस सरकार बन जाने से हमें शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन के लिए दीर्घकाल तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। और आज जब इस प्रकार के परिवर्तन होने को हैं तो शिक्षा के उन आदर्शों तथा उद्देश्यों से सम्बन्धित मौलिक प्रश्नों पर सम्यक् प्रकार से विचार करना चाहिए, जो कि भारतीय परिस्थिति के अनुकूल हों तथा जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक तत्त्वों में परस्पर सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए प्रतिकारात्मक पग उठाने चाहिए।

शिक्षा मानव जीवन की तैयारी है। अतः शिक्षा का लक्ष्य यह आदर्श होना चाहिए कि व्यक्ति का शरीर पहलवान के शरीर सा हो और आत्मा सन्त की आत्मा सी। यह स्मरण रहे कि जीवन में सच्ची सफलता तथा भगवत्साक्षात्कार केवल बौद्धिक विकास पर निर्भर न रह कर सुष्ठु एवं स्थिर स्वभाव तथा निष्कलङ्क चरित्र पर अधिक निर्भर करते हैं।

अतः शिक्षा व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित होनी चाहिए। उसका लक्ष्य मनुष्य के जीविकोपार्जन की समस्याओं के समाधान प्रस्तुत

करने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे कि वह समाज का एक उपयोगी सदस्य बन सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के हेतु चरित्र-निर्माण से सम्बन्धित समस्याओं को भी शिक्षा के कार्यक्षेत्र की परिधि में लाना होगा। इस विषय को अधिक सुस्पष्ट इस प्रकार किया जा सकता है कि नैतिकता और धर्म का तथा कहाँ पर नैतिकता समाप्त होती है और धर्म का प्रारम्भ होता है, इसका सम्यक् बोध होना अत्यावश्यक है। अध्यापक को ऐसे उपायों और साधनों को खोज निकालने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहना चाहिए जिससे कि उसके विद्यार्थी नैतिकता तथा धर्म को अपने दैनिक जीवन में व्यवहृत कर सकें। यही उसका सर्वोच्च धर्म अथवा कर्तव्य है। धार्मिक शिक्षा को साम्प्रदायिक शिक्षा का रूप नहीं लेना चाहिए। उसमें दूसरे धर्मों के सन्त-महात्माओं, योगियों, ज्ञानियों तथा पैगम्बरों की जीवनियों तथा उनके सदुपदेशों को भी समुचित स्थान देना चाहिए। यह नहीं भूलना चाहिए कि यद्यपि सम्प्रदाय अनेक हैं, किन्तु धर्म एक ही है। धर्म की शिक्षा का अर्थ है नैतिकता की शिक्षा और इस धर्म की शिक्षा देना ही प्रत्येक अध्यापक का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। मैं तो उसे ही योग्य अध्यापक मानता हूँ जो अपने छात्रों को अपने उच्च स्तरीय नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन द्वारा उतना ही प्रेरित कर सकता है, जितना कि वह

उन्हें अपने रोचक, आकर्षक एवं प्रलोभक शिक्षा-पद्धति के द्वारा प्रेरित करता है।

धर्म का उद्देश्य मानव को शिक्षित बनाना एवं उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अर्थात् उसके मस्तक, हृदय एवं हस्तों का सर्वांगीण विकास करना है और तभी पूर्णता की प्राप्ति भी सम्भव हो सकती है। एकाङ्गी विकास उपादेय नहीं है। आपका शिरोभाग (मस्तिष्क) शङ्कराचार्य के समान, हृदय (भावुकता) गौतम बुद्ध के समान और हाथ (कर्मशीलता) राजा जनक के समान होना चाहिए। कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग एवं ज्ञानयोग—ये चारों पथ परस्पर विरोधी न होकर इस बात के द्योतक हैं कि हिन्दू धर्म की विविध पद्धतियों में परस्पर पूर्ण ऐक्य एवं सामञ्जस्य है। कर्म, भक्ति तथा योग की परिणति ज्ञान में होती है।

कर्मयोग के अभ्यास से साधक का चित्त आत्म-ज्ञान के अवधारण के लिए उपयुक्त बनता है और साधक वेदान्त के अध्ययन का योग्य अधिकारी बन जाता है। अज्ञानी व्यक्ति कर्मयोग का प्रारम्भिक प्रशिक्षण प्राप्त किये बिना ही ज्ञानयोग की ओर छलाँगें लगाते हैं और यही कारण है कि सत्य के साक्षात्कार में उन्हें घोर असफलता ही प्राप्त होती है। उनके चित्त को कुवासनाएं अभी भी घेरे रहती हैं। उनका चित्त रागद्वेष से संकुल रहता है। वे ब्रह्म की कोरी चर्चा करते रहते हैं और नाना प्रकार की अनावश्यक चर्चा, व्यर्थ के वाद-

विवाद तथा शुष्क तथा अनवस्थादोषपूर्ण विवाद में उलझे रहते हैं। उनकी दार्शनिकता वाग्विलास-मात्र होती है। दूसरे शब्दों में वे केवल वाचाल वेदान्ती ही होते हैं। आज तो आत्मभाव से देश तथा मानवता की किसी न किसी रूप में सेवा करने वाले व्यावहारिक वेदान्तियों की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचार्य तथा अन्यान्य महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात कीजिए। देखिए, ये कितने महान् कर्मयोगी हैं। ये ही सच्चे वेदान्ती हैं, सच्चे सन्त-महात्मा तथा संन्यासी हैं। आपको विदित होना चाहिए कि वे बहुमुखी प्रवृत्तियों में संलग्न रहते हुए भी योग-साधना कर रहे हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वे भी उनके आदर्श उदाहरण का अनुसरण करें और अपने देशवासियों के सामान्य हित के लिए कार्य करें।

केवल सेवा के माध्यम से भी भगवत्-साक्षात्कार किया जा सकता है। पाठशालाओं तथा विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अपने अवकाश के समय को सेवा में विशेषकर समीपस्थ ग्रामवासियों की सेवा में सदुपयोग करना चाहिए तथा उनकी शिक्षा, स्वच्छता, चिकित्सा-सहायता तथा तथाविधि आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। महात्मा गाँधी एक अलौकिक व्यक्ति हैं, एक महान्

सन्त हैं, एक गम्भीर दार्शनिक तथा एक ऐसे सच्चे संन्यासी हैं जिनके दोनों 'सूक्ष्मदर्शीनेत्र' सुदूर भविष्य की गहनता में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। सम्प्रति काल में ही उन्होंने कैसी स्तुत्य योजनाएं आरम्भ की हैं। इन योजनाओं से मेरा तात्पर्य उनकी ग्रामों के पुर्ननिर्माण तथा हरिजनोद्धार सम्बन्धी योजनाओं से है। ऐसे सत्कार्य में अपनी सेवा प्रदान करने के लिए जिन धनाढच व्यक्तियों के पास समय नहीं है, उन्हें चाहिए कि इन सद् आदर्शों की पूर्ति के हेतु अपना योगदान उदार धर्मदान के रूप में सहर्ष प्रदान करें। उन्हें इन नेताओं को धन-जन से विविध रूपों में अपना सहयोग देना चाहिए। सेवा का तात्पर्य केवल शारीरिक सेवा से ही नहीं है। मेरी दृष्टि में राज-नीति तथा धर्म अभिन्न हैं।

आध्यात्मिक जीवन कोरा प्रलाप नहीं है। यह कोई रोमाञ्चकारी विषय नहीं है। यह वस्तुतः आत्मस्थितिमय जीवन है। यह तो अविकृत आनन्द की अतीन्द्रिय अनुमति है। यह पूर्ण एवं सर्वांगीण जीवन है। आध्यात्मिक जीवन यापन करने वाला साधक आध्यात्मिक शक्ति का महान् केन्द्र होता है। वह सर्वत्र आनन्द, शान्ति तथा सुख विकीर्ण करता है। उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति उससे महान् प्रेरणा तथा प्रगति प्राप्त करते हैं।

संसार के अन्धकार का नाश करने वाले, परम गुरु, परमेश्वर भगवान् हरि का स्मरण करो जो

कि समस्त सृष्टि के आधारभूत कारण है। इस सम्पूर्ण जगत् को उसने व्याप्त कर रखा है। वह स्वयं अजन्मा होते हुए भी सृष्टि के उद्भव का मूल कारण है। वह सम्पूर्ण प्राणियों की हृदय-गुहा को प्रकाशित करता है। वह शुद्ध चैतन्य है। वह इस जगत्-जाल का ताना-बाना है। वह सत्, नित्य, असीम, अवाङ्मनोगोचर तथा अजन्मा है। नित्यप्रति उसका ध्यान करें, उसके गुणों का चिन्तन करें तथा उसके पवित्र नाम का गायन करें। इससे आप अमरता तथा परम शान्ति प्राप्त करेंगे।

जो दिव्य चेतना सृष्टि के कण-कण को स्पन्दित करती है, वही चेतना समस्त मानव प्राणीके हृदयमें भी निवास करती है। जो आत्मा एक क्षुद्र पिपीलिका में निवास करती है वही श्रेष्ठतर मनुष्य में भी रहती है, जो आत्मा एक पापी में निवास करती है, वही सन्त में भी, जो आत्मा एक भिक्षुक में होती है वही एक महान् सम्राट् में भी और जो आत्मा एक हिन्दू में होती है वही आत्मा एक मुसलमान में भी होती है। इसमें रञ्चमात्र भी सन्देह नहीं है। प्रकृति में निहित अन्तिम सत्य ही पुरुष में निहित चरम सत्य है। इस आत्मा का अपरोक्षानुभूति द्वारा साक्षात्कार करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

इस बात का सदा ध्यान रखो कि सर्व नाम-रूपों में एक ही चैतन्य निवास करता है, एक ही शक्ति सर्व भूतों में सञ्चरित होती है तथा अनेकता

की कल्पना केवल एक मानसिक उपज है। परमात्मा इन सब नामरूपों में परिव्याप्त है। ऐसा करने पर आप ईश्वरीय चेतना की ओर अग्रसर होंगे।

वृक्ष, पुष्प, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र, तारागण, पशु-पक्षी, पर्वत, सरिता, सागर, मानव प्राणी—ये सब तथा अन्य सभी पदार्थ भी तो उस विराट् रूप भगवान् के शरीर के घटक हैं। अतः आपको जाति-पाँति तथा वर्णभेद का विचार न कर इन सब को दण्डवत् प्रणाम करना चाहिए, इन्हें साक्षात् परमात्मा ही समझना चाहिए। तभी आपको समदृष्टि तथा विश्वप्रेम की, परम शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। तब आपको इस मर्त्यलोक में ही स्वर्गलोक के दर्शन होंगे। सन्त तुलसीदास ने कहा है: 'सीय राममय सब जग जानी। करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।' यही परमात्मा के विराट् रूप की उपासना है।

सच्चे हृदय एवं स्थिर चित्त से भगवान् की महिमा का गायन करो। अनन्य भक्ति से माला की मणिकाओं को फेरो। अविचल श्रद्धा के साथ उसके पवित्र नाम का जप करो। रामायण तथा भागवत की कथाओं को एकाग्र मन से श्रवण करो। नेत्रों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित करो। नासिक, वाराणसी, हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयाग आदि तीर्थ-स्थलों का सेवन करो। साधु-सन्तों की खोज करो। पूर्ण विश्वास के साथ सच्चे हृदय से उनकी सेवा करो। उनके दर्शन-मात्र से ही सन्तुष्ट न हो जाओ,

वरन् उनसे कुछ आध्यात्मिक उपदेश लो और उन्हें अपने जीवन में चरितार्थ करो। सदाचार का विकास करो। तभी तुम सुगमतापूर्वक इस भव-सागर को पार कर सकते हो।

प्रत्येक चेहरे में भगवान् के दर्शन करो। भेद-दृष्टि ही मृत्यु है और अभेद-दृष्टि अमर जीवन है। महानता और लघुता के भाव अज्ञानजन्य ही होते हैं। अपनी सम्पत्ति में सबों को सहभोगी बनाओ। अपने देश तथा मानवता की आत्मभाव से सेवा करो। कुमारावस्था में ही आध्यात्मिक बीज वपन करो। एक ही शक्ति इन सब हाथों के द्वारा कार्य कर रही है, इन समस्त आँखों से देख रही है, सब मुखों से आहार ग्रहण कर रही है। इस महान् रहस्य को समझो तथा सर्वत्र अद्वैतता का अनुभव करो। विश्वभ्रातृत्व तथा विश्वप्रेम का विकास करो।

अनुभव करो कि निखिल विश्व आपका शरीर अथवा घर है। मनुष्य मनुष्य के बीच, राष्ट्र राष्ट्र के बीच, देश देश के बीच तथा जाति जाति के बीच की विभेदक दीवाल को ध्वस्त कर दो। 'ईशावास्यमिदं सर्वम्'—यह सम्पूर्ण जगत् परमात्मा से व्याप्त है। अनुभव करो कि यह सम्पूर्ण विश्व वृन्दावन है, यह देह परमात्मा का चल-मन्दिर है, तुम्हारा कार्यालय अथवा व्यवसाय-गृह एक विशाल देवालय अथवा वृन्दावन है तथा तुम्हारा चलना,

फिरना, वार्तालाप, लेखन, भोजन सङ्कीर्तन इत्यादि कार्य भगवद् आराधन है।

कर्म ही उपासना है। कर्म ही ध्यान है। कर्तापन के भाव का त्याग करो। किसी फल की आशा मत रखो। प्रत्येक कर्म को परमात्मा को समर्पण कर उसे योग का रूप दे डालो। यदि तुम वेदान्त मार्ग के साधक हो तो अकर्ता अथवा साक्षी भाव का और यदि भक्तिमार्ग के साधक हो तो निमित्त भाव का विकास करो। तुम में शीघ्र ही आपादमस्तक रूपान्तरण होगा, तुम्हें नये दृष्टि-कोण की प्राप्ति होगी।

सङ्कीर्तन—जब कई व्यक्ति एक साथ मिलकर कीर्तन करते हैं तो उससे प्रबल आध्यात्मिक शक्ति का निर्माण होता है। यह महाशक्ति चित्त के कल्मष को दूर करती, अज्ञानावरण को विदूरित करती तथा प्रचुर शान्ति एवं समता लाती है। यहाँ यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि सङ्कीर्तन एकमात्र भक्तिमार्ग का ही साधन नहीं है वरन् यह वेदान्त की अद्वैतानुभूति का भी एक साधन है। जब भक्तजन एकत्रित होकर कीर्तन करते हैं तो उसका प्रभाव बहुत ही घनीभूत होता है। सहस्रों लोगों के सम्मिलित होकर भगवन्नाम का कीर्तन करने के सुपरिणामस्वरूप प्रचुर आध्यात्मिक शक्ति प्रवाहित होती है जो लोगों की आध्यात्मिक चेतना को उद्बुद्ध करती है। एक साथ

मिलकर कीर्तन करते समय सबका ध्यान एक ही विषय पर केन्द्रित होने से सभी उस सामान्य लक्ष्य के लिए प्रयास करते हैं और इस भाँति वे एक दूसरे को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हैं।

आजकल पञ्जाब में सङ्कीर्तन-भक्ति-रूपी सुमन खूब विकसित हो रहा है। बहुत से लोग अब तक इसकी महिमा तथा इससे होने वाले लाभों से परिचित हो चुके हैं तथा कई अभी अनुभव कर रहे हैं। महिलाएं इसमें विशेष रुचि एवं उत्साह रखती हैं जिसके लिए वे निश्चय ही बधायी की पात्र हैं। इस आन्दोलन की जड़ें विशेषकर लाहौर में बहुत गहराई तक पहुँच चुकी हैं। इसके लिए कुछ भक्तों का प्रयास विशेष रूप से सराहनीय है। किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। अपने प्रयास को सफलता के मुकुट से विभूषित करने के लिए उन्हें अभी और अधिक उत्साह के साथ कार्य करना होगा। मार्ग में यदि बाधाएं आती हैं तो आने दें। उससे हताश न हों। ये तथाकथित बाधाएं वृन्दा-वन-वासी वंशीधर भगवान् कृष्ण की सद्य: कृपा से वैसे ही विलीन हो जायेंगी जैसे कि प्रातःकाल सूर्योदय होने पर नीहार-कण अदृश्य हो जाते हैं।

यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि पञ्जाब में और विशेषकर लाहौर नगर के विविध मुहल्लों में कई सङ्कीर्तन मण्डलियों की स्थापना हो चुकी है। इनका स्वस्थ विकास हो, इनमें परस्पर सह-योग और शुद्ध प्रेम हो, इसका प्रोत्साहन देने के

लिए एक संस्था की अपरिहार्य आवश्यकता अनुभव हो रही है। वह दिन दूर नहीं जब सामान्य रूप से सारे पञ्जाब में और विशेष रूप से लाहौर के मुहल्ले-मुहल्ले में, गली-गली में, इतना ही क्यों, घर-घर में सङ्कीर्तन होना आरम्भ हो जायगा। जिस प्रदेश ने गुरु नानक, गुरु गोविन्द सिंह तथा स्वामी रामतीर्थ को जन्म दिया है, उसे अपने भविष्य के सम्बन्ध में भय किस बात का ?

आत्मसाक्षात्कार अथवा भगवत्-साक्षात्कार माँग और पूर्ति का विषय है। यदि आप भगवान् की खोज में सच्चे हैं, यदि आप वास्तव में परमात्मा को चाहते हैं और यदि आप उसके लिए इतने आतुर हैं कि उसके वियोग में एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते तो निश्चय ही आपको इसी क्षण भगवान् की प्राप्ति हो सकती है। सदैव उसका स्मरण करो। उसके नाम एवं गुणों का गान करो तथा अपने ही हृदय में उसकी खोज करो। उसके सच्चे भक्तों से उसकी उपासना व भक्ति का ठीक मार्ग ज्ञात करो, जो आपकी आत्मा का आधार है, जो इस विश्व का एकमात्र स्वामी है और आपके हृदय का अन्तर्वासी है।

यदि आप अपने इस पाँचभौतिक शरीर का त्याग करते समय ईश्वर का स्मरण बनाये रख सकें तो आपको भगवान् का अवश्यमेव साक्षात्कार होगा। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में आश्वासन दिया है :

'अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ।।'

—जो पुरुष अन्तकाल में मेरे को स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है—(गीता ८-५)। परन्तु यदि आप आजीवन उसकी पावन स्मृति को बनाये रखने का अभ्यास नहीं करते तो फिर किस तरह मरण-काल में उसका स्मरण कर सकोगे ?

अभी से अनुभव करो कि ये सभी प्राणी—चींटी, कुत्ता, हाथी, सिंह, हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, ईसाई तुमसे अभिन्न हैं और इनके साथ तुम्हारा घनिष्ठ सम्बन्ध है। भेद तो केवल नाम और रूप में है। सभी रूप उस परमात्मा के, उस सगुण ब्रह्म के ही तो हैं। जब कभी भी तुम्हें कोई वृक्ष या पौदा, कुत्ता या बिल्ली, सिख या मुसलमान, ईसाई या पारसी दिखायी पड़े तो उस रूप के पर्दे के पीछे छिपे हुए चैतन्य के दर्शन करने का प्रयत्न करो। कुछ काल तक ऐसा अभ्यास करते रहने से तुम्हें अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होगा। घृणा का भाव जाता रहेगा। वैश्व प्रेम तथा चैतन्य की एकता की भावना विकसित होगी। हिन्दू-मुसलिम एकता की सारी समस्याएं सुलझ जायेंगी। यह एक भव्य अनुभूति होगी।

प्रेम ही मनुष्य को मनुष्य से विभाजित करने वाली दीवाल को ध्वस्त कर सकता है। प्रेम ही

सब प्रकार के अवाञ्छनीय द्वेष और पक्षपात को, असहिष्णुता और घृणा को समूल नष्ट कर सकता है। प्रेम ही यहूदियों और जर्मनों को, हिन्दू और मुसलमानों को, कैथोलिक और प्रोटेस्टैण्ट ईसाइयों को, ब्राह्मणों और अब्राह्मणों को, वैष्णवों और शवों को, सनातन धर्मावलम्बी और आर्यसमाजियों को, शाक्त और रामानन्दियों को, अंग्रेजों और इतालवियों को, चीनी और जापानी को, संन्यासी और वैरागी को एक मञ्च पर ला सकता है और उनके हृदयों को जोड़ सकता है।

मनुष्य केवल रोटी पर निर्वाह नहीं कर सकता है, परन्तु वह भगवन्नाम पर आश्रित रह कर निर्वाह कर सकता है। प्रेम तथा आत्मभाव से देश एवं मानवता की सेवा द्वारा भागवतीय चेतना की प्राप्ति में ही सच्चा स्वराज्य निहित है। स्वार्थ-परता, लोभ, काम, मद अहङ्कार के समूल उन्मूलन द्वारा प्रेम का विकास करो।

सङ्कीर्तन-भक्ति-योग के अभ्यास तथा भगवान् कृष्ण की कृपा से तुम ज्ञान और पूर्णता को—अपने जीवन-लक्ष्य को—प्राप्त कर सकते हो। इस मार्ग में कहीं भी पतन की सम्भावना नहीं है। सफलता सुनिश्चित है। इसके लिए तुम्हें अपना सम्पूर्ण चित्त भगवान् के चरण-कमलों में समर्पित करना होगा और अपने सिख व मुसलिम भाइयों के साथ मिल कर हृदय के अन्ततम प्रकोष्ठ से उसके पवित्र नाम का गायन करना होगा। भगवान् कृष्ण ने कहा है—

'कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति'—

हे अर्जुन ! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता। (गीता : ९-३१)

श्री रामानुजाचार्य ने कहा है कि भक्ति का

विकास करने के लिए निम्नांकित सद्गुणों का अर्जन करना चाहिए—(१) विवेक, (२) विमोक, (३) अभ्यास, (४) क्रिया, (५) कल्याण, (६) सत्य, (७) आर्जव, (८) दया, (९) अहिंसा, (१०) दान और (११) अनवसाद।

भगवान् की सहायता की याचना करते हुए हाथ पर हाथ रक्खे बैठे न रहो। उठो और अध्यवसाय में लग जाओ; क्योंकि भगवान् उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। यथाशक्य प्रयास करो और शेष परमात्मा पर छोड़ दो। परमात्मा से वैसा ही प्रेम करो जैसा कि राधा ने किया था। यही प्रेम की सर्वोच्च परिणति है। भगवान् कृष्ण के प्रति राधा के समान ही मधुर भाव रखो। इससे शनैः शनैः भक्ति का विकास होगा। तुम अमरत्व एवं भगवत् साक्षात्कार प्राप्त करोगे।

पूर्ण हार्दिकता से प्रार्थना करो—'हे स्वयंप्रकाश प्रभु! तू ही सबका आधार, त्राता, स्रष्टा, अन्तर्यामी, नियामक, शासक, स्वामी, रक्षक तथा उद्धारक है। तू ही अज्ञानान्धकार का उन्मूलक है। तू ही अपने भक्तों के दुःख और शोक का निवारक है। तू ही मानव के त्रयतापों का विनाशक है। हे श्रद्धेय प्रभु! तुझे नमस्कार है! मैं तेरी शरण में हूँ। मेरा यह चञ्चल तथा उपद्रवी मन तेरे पवित्र चरण-कमलों में सदा लगा रहे। मुझे शुचिता, भक्ति, पूर्णता तथा ज्ञान प्रदान कर।'

सम्प्रतिकालीन जगत् को विश्वप्रेम के सन्देश की महान् आवश्यकता है। सर्वप्रथम अपने हृदयों में प्रेम–ज्योति प्रज्वलित करो। सब से प्रेम करो। विशुद्ध प्रेम ही एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के साथ, एक जाति को दूसरी जाति के साथ मिला सकता है। पारस्परिक प्रेम ही विश्व-युद्ध को समाप्त कर सकता है। राष्ट्रसंघ तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस दिशा में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकती है। प्रेम ही वह अलौकिक दिव्य श्लेष है जो एक व्यक्ति का हृदय दूसरे व्यक्ति के हृदय के साथ जोड़ता है। यह समाज में प्रचलित सभी व्याधियों के लिए एक दिव्य, मायिक तथा उच्च कोटि की शक्ति से पूर्ण औषधि है। प्रत्येक कर्म को प्रेम से संपृक्त करो। प्रलोभन, धूर्तता, दुष्टता एवं स्वार्थ-परता का विनाश कर दो। विषैली वाति के प्रयोग के द्वारा प्राणियों का संहार करना महान् क्रूरता है। आपको किसी के प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं है। यह जघन्य पाप है। विज्ञान की प्रयोग-शालाओं में ऐसी विषैली वाति के आविष्कारक वैज्ञानिक इस भयानक पाप के परिणाम से मुक्त नहीं हो सकते। न्याय के दिन को न भूलो। धन, बल एवं सत्ता के पीछे भागने वाले ऐ मर्त्यप्राणियों, उस दिन परमात्मा को क्या उत्तर दोगे ? अपने अन्त:करण को निर्मल रखो, हृदय को शुद्ध प्रेम और दया से परिपूर्ण रखो। इससे तुम परमात्मा के राज्य में प्रवेश करने में समर्थ होगे।

प्रेम से बढ़कर अन्य कोई शक्ति नहीं है। प्रेम के वशीभूत होकर ही ब्रह्म ने अपने भक्तों के आह्लाद के लिए चतुर्भुज हरि का रूप धारण किया। वह अपने हाथ में भोजन तथा जल लेकर अपने भक्तों के पीछे जंगलों में मारा-मारा फिरता है। इस प्रेम ने ही भगवान् बुद्ध, ईसा मसीह, एकनाथ तथा अन्य अनेकों सन्तों को शास्त्र के गूढ़ रहस्यों का उपदेश देने के लिए प्रेरित किया। प्रेम भक्तों की जादू की छड़ी है। वह इसे एक अद्भुत रूप से फिराता है जिससे सम्पूर्ण संसार उसके सम्मुख नतमस्तक हो जाता है। विशुद्ध प्रेम सम्पन्न व्यक्ति त्रयलोक का सम्राट है।

ऋषि, मुनि, साधु, सन्त, योगी तथा महात्माओं वाला, गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु तथा कावेरी आदि पवित्र नदियों वाला तथा भव्य हिमालय पर्वत वाला भारत तेरी जय हो! प्राचीन गौरवों वाला भारत, श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीव्यास, श्री शंकराचार्य, श्री दत्तात्रेय, महर्षि पतंजलि आदि महापुरुषों के चरणों के रज से पवित्र भूमि वाला भारत तेरी जय हो। तप, योग और ध्यान की मधुर जन्म-भूमि आर्यवर्त, ऋषि, मुनि एवं योगियों से अद्यावधि आपूर्ण आर्यवर्त तेरी जय हो! हे मातृभूमि भारत, हे देवभूमि भारत, हे ऋषिभूमि भारत! तेरी जय हो। भगवान् तेरी सेवा करने तथा तेरे विजय ध्वज को आकाश में लहराने के लिए तेरी संतान को सद्बुद्धि, आत्मज्ञान, तथा अध्यात्म-बल प्रदान करे!

डिवाइन लाइफ सोसाइटी

(दिव्य जीवन संघ)

की सदस्यता

—:०:—

डिवाइन लाइफ सोसाइटी एक सम्प्रदाय निरपेक्ष संस्था है जिसके विशाल दृष्टिक्षेत्र में सभी धर्मों के और सामान्य रूप से आध्यात्मिक जीवन के सर्वमान्य मौलिक सिद्धान्त समाहित हैं। कोई भी व्यक्ति, जिसकी सत्य, अहिंसा तथा शुचिता के आदर्शों में निष्ठा है, इस संस्था का सदस्य बन सकता है। यह संस्था सभी बातों और धार्मिक रूढ़ियों को समान रूप से सम्मान प्रदान करती है। संस्था के सिद्धांतों, दार्शनिक मान्यताओं तथा उपदेशों में सभी मतों और सम्प्रदायों के सिद्धांतों का अनुकलन होने से इसके सदस्यों की पारम्परिक भूमिका तथा धार्मिक मान्यताएं पृथक्-पृथक् हैं, फिर भी वे इनके आधार पर न तो मतभेद को मान्यता देते हैं और न विघटनकारी मनोवृत्तियों को ही प्रश्रय देते हैं। सच्चे आत्म-ज्ञान तथा अहं को विलय कर उसकी परिधि से "ऊपर उठ जाने में ही आध्यात्मिक साधना का रहस्य निहित है", इस तथ्य को प्रकट करने तथा प्रत्येक प्राणी में भागवतीय चेतना की सम्भावनाएं हैं तथा "भले बन कर और भला करके" अपनी बाह्य और अन्तः प्रकृति पर

नियन्त्रण स्थापन द्वारा इस अन्तर्स्थित भागवतीय चेतना का अभिव्यक्तिकरण का प्रयास करना ही प्रत्येक व्यक्ति का जीवन-लक्ष्य है। संस्था की प्रवृत्तियां मानवोपकारी, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक कार्यों के लिये समर्पित हैं। उपरोक्त आदर्श सम्पन्न कोई भी व्यक्ति डिवाइन लाइफ सोसाइटी का सहर्ष सदस्य बन सकता है।

प्रति सदस्य का वार्षिक सदस्यता शुल्क ५) रु० है और यह शुल्क प्रति वर्ष भुगतान करके नवीकरण कराना होता है। प्रत्येक नये सदस्य का सदस्यता-शुल्क, जो कि केवल एक बार ही देय है, ५) रु० है। प्रार्थी के यथावत् पूर्ति तथा हस्ताक्षरित किये हुए प्रवेश-पत्र तथा उपरोक्त शुल्क के प्राप्त होने पर उसे प्रारम्भिक साधना के कुलक रूप स्वामी शिवानन्द द्वारा रचित "एसेंस आफ योगा" नामक अंग्रेजी पुस्तक की एक प्रति, 'जपमाला', आध्यात्मिक दैनन्दिनी के कुछ पृष्ठ तथा संकल्प-पत्र आदि साधना-सम्बन्धी प्रकाशन दिये जाते हैं। सदस्यों को संस्था की आधिकारिक अंग्रेजी पत्रिका "डिवाइन लाइफ" भी प्राप्त होती है। इसके लिये उन्हें कोई अतिरिक्त मूल्य नहीं चुकाना होता है। सदस्यता में सम्मिलित होने के लिए साधकों का हार्दिक स्वागत है।
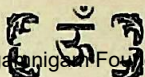
THE DIVINE LIFE SOCIETY

THE SIVANANDA PUBLICATION LEAGUE

P.O. Sivanandanagar

Dist. Tehri-Garhwal, U.P., Himalayas, India

IN ENGLISH

BY H.H. SRI SWAMI SIVANANDA

		PRICE
UPANISHAD DRAMA	..	3.00
JAPA YOGA	..	3.50
PRACTICAL LESSONS IN YOGA	..	4.00
WHAT BECOMES OF THE SOUL AFTER DEATH	..	4.00
YOGASANAS	..	2.50
YOGIC HOME EXERCISES	..	3.75
SCIENCE OF PRANAYAMA	..	2.50
THOUGHT-POWER	..	2.50
CONQUEST OF ANGER	..	0.60
SURE WAYS FOR SUCCESS IN LIFE AND GOD-REALISATION	..	5.00
NECESSITY FOR SANNYASA	..	4.00
BLISS DIVINE	..	10.00
SADHANA	..	12.00
ELIXIR DIVINE	..	1.00
DIVINE NECTAR	..	6.00
EPISTLES OF SIVANANDA		*(In Press)*
GURU TATTWA	..	1.25
PUSHPANJALI	..	1.50
INSPIRING STORIES *(In short poems)*	..	2.00

		PRICE
STORIES FROM YOGA-VASISHTHA	..	3.00
TUBERCULOSIS	..	3.00
HEALTH AND HYGIENE	..	5.50
MEDICAL CONFERENCE SOUVENIR	..	3.50
ASTHMA—ITS CAUSE AND TREATMENT		1.50
LIGHT FOUNTAIN (By Sri Swami Chidananda)	..	2.50
RESURGENT CULTURE (By Sri Swami Krishnananda)	..	1.00
LECTURES ON SPIRITUAL PRACTICE	..	4.00
SIVANANDA'S VISION OF DIVINE LIFE (Sri K.S. Ramaswami Sastri)	..	1.25
SVANANDASHRAM BHAJANAVALI (By Sri Swami Vidyananda)	..	3.00
MYSTIC VISIONS (By Sri Swami Kaivalyananda)	..	3.75
SPARKS OF SPIRITUAL LIGHT (By Sri N.S.V. Row)	..	1.50

IN HINDI

कर्मयोग साधना	...	५.००
विद्यार्थी जीवन में सफलता	...	३.००
जीवन में सफलता के रहस्य	...	६.००
साधना	....	१२.००
मनोजय	...	२.००
मरणोत्तर जीवन और पुनर्जन्म	...	४.००
बालकों के लिए दिव्य जीवन संदेश	...	३.००
हिन्दू-धर्म-सर्वस्व	...	४.००
अध्यात्म-विद्या	...	७.००

IN SANSKRIT

PRICE

शिवानन्द सहस्रनामावलिः
(श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी सरस्वती) ... ०.५०

IN GUJARATI

DAINIK DHYAN	..	2.50
PRERAK KATHAO	..	2.50
YOGABHYASA	..	3.50
BALKO MATE DIVYA JEEVAN	..	3.50
SRI KRISHNA LEELA ANE JNANAMRIT		4.50
HINDU VRAT ANE TYOHAR	..	2.50
DIVYA RASAYANA	..	1.00
VISHWA SHANTI	..	3.00

IN ASSAMEES

INTEGRAL YOGA .. 2.00

IN TAMIL

GURUDEV SIVANANDA .. 2.00

IN BENGALI

GOD AS MOTHER
(By Sri Swami Chidananda .. 1.50

MONTHLY JOURNALS (MAGAZINE)

Annual Subscription

THE DIVINE LIFE (English) .. 6.00

योग-वेदान्त (हिन्दी मासिक पत्र) ... ३.७५

श्री स्वामी शिवानन्दजी के प्रख्यात हिमांचलीय आयुर्वेदिक उत्पादन :—

****

१. शिवानन्द-दन्तरक्षक —
मूल्य– ५० पैसे पैकेट, रु० १-२० एवं रु० ३-१५ प्रति टिन।

२. च्यवनप्राश (अष्टवर्ग युक्त) —
मूल्य– रु० २-८०, रु० ५-००, एवं रु० ९-५० प्रति टिन।

३. ब्राह्मी आँवला औषधीय तैल —
मूल्य– रु० २-१०, एवं रु० ७-०० प्रति शीशी।

४. शुद्ध शिलाजीत —
मूल्य– रु० १-२०, एवं रु० ५-१० प्रति शीशी।

५. वसन्त कुसुमाकर (स्वर्ण-मुक्ता-कस्तूरी पूर्ण)—
मूल्य– रु० ४-०० प्रति ग्राम (२० दिन का कोर्स ५ ग्राम)।

६. चन्द्रप्रभा —
मूल्य– रु० १-६० एवं रु० ३-०० प्रति शीशी।

७. महायोगराज गुगुलु —
मूल्य– रु० २-६० एवं रु० ४-९० प्रति शीशी।

८. पामान्तक—(केवल वाह्य उपयोगार्थं) —

मूल्य– रु० २-२५ प्रति शीशी।

९. ब्रह्मचर्य सुधा —

मूल्य– रु० ४-२५ प्रति टिन।

१०. क्षुधा वर्द्धक —

मूल्य– रु० १-२० एवं रु० २-३० प्रति शीशी।

११. कुटज योग —

मूल्य– रु० १-९० एवं ३-५० प्रति शीशी।

१२. आरोग्यदा —

मूल्य– रु० १-६० एवं रु० ३-०० प्रति शीशी।

१३. बी० एम० के० त्रिचूर्ण —

मूल्य– रु० १-१० प्रति पैकेट।

१४. महानारायण तैल — (केवल वाह्य उपयोगार्थं)

मूल्य– रु० १-५० एवं रु० ३-५० प्रति शीशी।

१५. व्रणलेपन —

मूल्य– रु० १-५० प्रति टिन।

१६. मधुमेह निवारक —

मूल्य रु० २-२५ एवं रु० ४-०० प्रति टिन।

१७. ब्राह्मी बूटी —

मूल्य– रु० १-२० प्रति पैकेट।

१८. दशमूलारिष्ट — (कस्तूरी एवं अष्टवर्ग युक्त)
मूल्य– रु० ३-७० प्रति शीशी।

१९. अशोकारिष्ट —
मूल्य– रु० ३-२० प्रति शीशी।

२०. अर्जुनारिष्ट —
मूल्य– रु० ३-२० प्रति शीशी।

२१. बाल जीवनामृत —
मूल्य– रु० २-२५ प्रति शीशी।

२२. त्रिफला चूर्ण —
मूल्य– रु० २-२५ प्रति टिन।

२३. नेत्र ज्योति सुरमा —
मूल्य· रु० १-९० प्रति पैकेट।

२४. महाएलादिवटी —
मूल्य– रु० १-६० एवं रु० ३-०० प्रति शीशी।

नोट :— विस्तृत जानकारी के लिए इस पते पर पत्र-व्यवहार करें।

शिवानन्द आयुर्वेदिक फार्मेस्यूटिकल वर्क्स,
डिवाइन लाइफ सोसाइटी, पोस्ट —शिवानन्दनगर,
जिला—टिहरी गढ़वाल, यू०पी० (हिमालय)

योग - वेदान्त

(हिन्दी मासिक पत्र)

संस्थापक—श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

सम्पादक—श्री स्वामी चन्द्रशेखरानन्द सरस्वती

वार्षिक चंदा : ३ रु० ७५ पैसे; एक प्रति ३५ पैसे।

यह पत्र शिवानन्द हिंदी साहित्य का अनमोल रत्न है।

"योग वेदान्त आरण्य अकादमी" का मुख-पत्र होने से इसमें सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, योग और वेदान्त विषयक सुबोधगम्य सामग्री रहती है।

योग के जटिल अर्थ को साधारण जन-समाज में सरल रीतियों से समझाने के लिए यह उत्तम माध्यम है। अपने पवित्र विचारों को लेकर यह पत्र नवीन आध्यात्मिक युग की शङ्खध्वनि सुनाता है।

इस पत्र में सर्वसाधारण के लेखों को प्रकाशित नहीं किया जाता है, किन्तु अनुभव के आधार पर जो लेख लिखे गए हों और जिनके विचारों की पृष्ठभूमि ठोस और प्रामाणिक हो, ऐसे लेखों को ही इस पत्र में प्रकाशित किया जाता है। जीवनोपयोगी व्यावहारिक सिद्धान्त को प्रकट करने वाले लेख पत्र में अवश्य प्रकाशित किये जाते हैं।

यह पत्र किसी सम्प्रदाय विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करता, किन्तु विश्वात्म-भावना के उद्देश्य को अंगीकार कर, केवल उसी सिद्धान्त का हर रीति से प्रतिपादन करता है।

योग-वेदान्त,

डिवाइन लाइफ सोसायटी पो० शिवानन्दनगर,

जिला टिहरी-गढ़वाल (यू०पी०)

सबसे महान् दान   ज्ञान का दान

ज्ञान–यज्ञ

(आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार)

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज मानवता की सेवा के लिए करीब पच्चीस साल तक इस महान् यज्ञ को करते रहे थे।

तथा उन्होंने आपको सुअवसर प्रदान किया जिससे कि आप ईश्वरीय कृपा, महिमा तथा आशीर्वाद को प्राप्त करें।

स्वामी जी की बहुत सी पुस्तकें अभी तक अप्रकाशित हैं। अपने धर्म-धन के द्वारा आप उन पुस्तकों में से किसी को भी अपने नाम से छपवा सकते हैं। लाखों इससे लाभ उठायेंगे।

एक पुस्तक को छपवाने में लगभग खर्च ५००) रु० से २०००) रु० तक। विशेष जानकारी के लिए नीचे के पते पर लिखिए।

सेक्रेटरी, डिवाइन लाइफ सोसाइटी,
शिवानन्दनगर, जिला टिहरी गढ़वाल

(अगले पृष्ठ का शेषांश)

शीतांशुवह्नि [illegible]

पूताकृते पुलिनशो[illegible]
पातालगामिनि निरस्तसमस्तपापे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥७॥

पीनानुभावसहितार्यमहर्षिवृन्द-
स्नानाचमादिनियमैरतिपूततोये
मीनावहारमुखजीविविहाररंगे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥८॥

विद्याधरप्रकरगीतयशोविताने
विद्याविशारदकविप्रवराभिवर्ण्ये
हृद्यानवद्यचरिते सरितां वरेण्ये
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥९॥

सन्तापहारिणि समस्तनृणां नितान्तं
सन्तारके जनगणान् भवसिन्धुपारम्
शान्तान्तरंगमुनिवृन्दनिषेव्यमाणे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥१०॥

मुक्तिप्रदायिनि निजांबुजुषामजस्रं
शक्तिप्रभावनिलये निखिलाभिषेव्ये
उक्तिप्रकर्षविषये बहुकोविदानां
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥११॥

नारायणांघ्रिनलिनाग्रभवे पवित्रे
मारारिशीर्षनिलये कृतिनुत्यमन्त्रे
वाराकराभिमुखगामिनि पुण्यरूपे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥१२॥

फलश्रुतिः

यः प्रातरेतदतिपावनसुप्रभातं
भागीरथी[illegible]
भक्त्या [illegible]

मुक्त्यास्पदं मुरारिपोः पदमेव यायात् ॥

गङ्गासुप्रभातम्

श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती, शिवानन्दनगर

मानातिरिक्तसुकृतैरभिदृश्यमूर्ते
नानाकवीन्द्रनिकरैरभिगीतकीर्ते
आनाकवासिजनजीवनदानदीक्षे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥१॥

तुंगाद्रिगह्वरविनिर्गतवारिपूरे
भंगावलीसहितमञ्जुलभव्यरूपे
अंगाभिलीनबहुसत्त्वगणाभिपूर्णे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥२॥

सर्वासुमत्प्रकरपोषणजागरूके
दुर्वारशक्तियुतविस्मयदप्रवाहे
शर्वोत्तमांगगलिते दलिताघजाले
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥३॥

गंभीररूपिणि गताघजनाभिगम्ये
कुंभीरजालनिलये चलदूर्मिमाले
कुंभीन्द्रतुल्यजलजन्तुकुलाधिवासे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥४॥

वाताशनोपमगते परितापभाजां
शातावहे शतमखावरजांघ्रिजाते
शीतामलांबुशिशिरीकृतजीवराशे
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥५॥

आलोलवीचिकचभारयुते निकाम-
मालोकनीयसुषमान्वितफेनहासे
[illegible]निपुणे निखिलाश्रितानां
गंगे नरामरनुते तव सुप्रभातम् ॥६॥

(शेष पिछले पृष्ठ पर)